


---

sUryaprAtaHsmaraNam

——  
सूर्यप्रातःस्मरणम्

——  
Document Information



---

Text title : sUryaprAtaHsmaraNastotram

File name : sUryaprAtaHsmaraNastotram.itx

Category : suprabhAta, navagraha

Location : doc\_z\_misc\_navagraha

Transliterated by : Sunder Hattangadi

Proofread by : Sunder Hattangadi

Latest update : April 2, 2016

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---


Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

December 22, 2023

*sanskritdocuments.org*

---



---

sUryaprAtaHsmaraNam

सूर्यप्रातःस्मरणम्



प्रातः स्मरामि भलु तत्सवितुर्वरेण्यं  
रुपं छि मण्डलमृथोऽथ तनुर्यञ्छूषि ।  
सामानि यस्य किरणाः प्रभवद्विडेतुं  
ब्रह्माडरात्मकमलक्ष्यमयिन्त्यरुपम् ॥ १ ॥

प्रातर्नमामि तरणितनुवाज्मनोभि-  
ब्रह्मेन्द्रपूर्वकसुरैर्नुतमर्थितं य ।  
वृष्टिप्रमोचनविनिग्रहतेतुभूतं  
त्रैलोक्यपालनपरं त्रिगुणात्मकं य ॥ २ ॥

प्रातर्भजामि सवितारमनन्तशक्तिं  
पापौघशत्रुभयरोगहरं परं य ।  
तं सर्वलोककलनात्मककालमूर्तिं  
गोकण्ठबन्धनविमोचनमादित्येवम् ॥ ३ ॥

श्लोकत्रयमिदं भानोः प्रातः प्रातः पठेतु यः ।  
स सर्वव्याधिनिर्मुक्तः परं सुभमवाप्नुयात् ॥ ४ ॥

Encoded and proofread by

---

sUryaprAtaHsmaraNam

pdf was typeset on December 22, 2023

Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

